साहस और दृढ़-निश्चय जादुई ताबीज हैं,जिनके आगे कठिनाईयां दूर हो जाती हैं और बाधाएं उड़न-छू हो जाती हैं।

खेती री बातां

वर्ष–18 अंक–6 मासिक पत्रिका आर.एन.आई. – 70296/98 5 जून 2015 वार्षिक शुल्क– 12 रुपये

कृषक पुरस्कार समारोह

रिसर्जेंट राजस्थान में कृषि पर भी होगा फोकस

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने राज्य कृषि प्रबन्ध संस्थान, दुर्गापुरा, जयपुर में 21 मई को आयोजित ''राज्य स्तरीय कृषक पुरस्कार समारोह'' को संबोधित करते हुए कहा कि निवेश केवल औद्योगिक क्षेत्र में ही नहीं होता, कृषि में नई तकनीक व इससे जुड़े भण्डार गृह, रेफ्रीजरेटेड वैन, कैटल फीड, पॉल्ट्री फीड आदि व्यवसायों में भी निवेश लाया जा सकता है। इसलिए नवम्बर में प्रस्तावित रिसर्जेंट राजस्थान पार्टनरशिप समिट में हमारा फोकस कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ाने पर रहेगा। कृषि और उद्योग को जोड़कर अधिक से अधिक लोगों को रोजगार दिया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार किसानों को खेती और डेयरी फार्मिंग की नवीनतम तकनीकों की जानकारी लेने के लिए इज़रायल एवं नीदरलैण्ड के दौरे पर भेजेगी। इजरायल में अनपाई जाने वाली कृषि तकनीकों का अनुभव राजस्थान के किसान वर्तमान में ले भी रहे हैं। नीदरलैण्ड में डेयरी एवं फूलों की खेती का बहुत अच्छा काम होता है और किसान उसे देखने के लिए जायेंगे ताकि अपने यहाँ ऐसी तकनीकों को अपना सके।

मुख्यमंत्री ने किसानों से आग्रह किया कि वे बूंद–बूंद सिंचाई एवं अन्य नई तकनीक अपनाएं और खेतों में रासायनिक खादों का कम से कम उपयोग करते हुए जैविक कृषि को प्राथमिकता दें। उन्होंने कहाँ कि इसके लिए सरकार ने सॉयल हैल्थ कार्ड योजना शुरु की है जिसके तहत राज्य में मिट्टी व पानी की सेहत जाँचने के लिए 55 नई प्रयोगशालाएं शुरु की जा रही हैं।

श्रीमती राजे ने कहा कि जैविक खेती जमीन के छोटे टुकड़ों पर भी संभव है। मैं भी किसान हूँ। स्वयं जैविक खेती करती हूँ। अपने आवास पर मैं रासायनिक खादों का उपयोग किए बिना कई तरह की सब्जियाँ उगाती हूँ। जैविक खेती के लिए नीम की खली, गौ–मूत्र, चाय की पत्ती आदि का खाद के रुप में इस्तेमाल किया जा सकता है। जैविक खेती में कुछ समय तक पैदावार कम रह सकती है, लेकिन दो–तीन वर्ष में अच्छे परिणाम मिलने लगते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जयपुर के बाद अब प्रदेश के सभी संभागों में किसान सेवा केन्द्रों या किसान भवनों पर सभागार स्थापित किये जायेंगे। यहाँ किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम व बीज केन्द्र आदि की व्यवस्था उपलब्ध कराई जायेगी। उन्होंने कहा कि सरकार नील गाय से फसलों को होने वाले नुकसान के प्रति गंभीर है और इस समस्या के उचित समाधान के लिए विशेषज्ञों की समिति सहित कई स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं।

श्रीमती राजे ने कहा कि न्याय आपके द्वार अभियान के तहत राजस्व लोक अदालतें 18 मई से पूरे प्रदेश में शुरु हो गई हैं। इस अभियान का उद्देश्य है कि किसानों के बीच रंजिशें खत्म हों और आपसी विवाद एक साथ बैठकर बातचीत से निपटें। हमने विभिन्न राजस्व न्यायालयों में लम्बित चार लाख प्रकरणों में से डेढ़ लाख को आगामी 15 जुलाई तक निपटाने का लक्ष्य रखा है। पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता करते हुए

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभु लाल सैनी ने कहा कि मौसम आधारित फसल बीमा योजना के तहत 21 जिलों में 562 करोड़ रुपये की राशि किसानों को दी जायेगी और 12 अन्य जिलों में भी किसानों को परिवर्तित फसल बीमा योजना का लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने सामुदायिक आधार पर जैविक खेती के लिए 56 करोड़ रुपये की राशि भी स्वीकृत की है।

मुख्यमंत्री ने कृषि में नवाचार अपनाने व उत्कृष्ट खेती करने के लिए वर्ष 2013–14 के 496 एवं 2014–15 के 66 किसानों को पुरस्कार प्रदान किये। राज्य स्तर पर वर्ष 2013–14 के लिए श्री अशोकसिंह मेतवाला (बांसवाड़ा) तथा श्री जयप्रकाश गहलोत (कोटा) एवं वर्ष 2014–15 के लिए श्री कानाराम यादव (जयपुर) तथा श्री गंगाराम सैनी (टोंक) को 50–50 हजार रुपये का चैक एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। जिला स्तर के 128 उत्कृष्ट किसानों को पुरस्कार स्वरुप 25 हजार रुपये का चैक एवं पंचायत समिति स्तरीय किसानों को 10 हजार रुपये के चैक एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया।

आ गया है दूरदर्शन का किसान चैनल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 26 मई को दूरदर्शन के किसान चैनल का शुभारम्भ किया। ''डीडी किसान'' चैनल पर कृषि विज्ञान, कृषि मंडी की ताजा जानकारी, मौसम का हाल, ग्रामीण विकास से जुड़े मुद्दे, खेती व पशुपालन की नयी तकनीकों की जानकारी, विशेष डाक्यूमेंट्री और फीचर्स के साथ–साथ गांव के लोगों की रुचि को ध्यान में रखकर मनोरंजन के कार्यक्रम भी प्रसारित किये जायेंगे। यह चैनल दूरदर्शन फ्री डिश के चैनल न.–16, टाटा स्काई के चैनल न.– 565, डिश टीवी के चैनल न.– 136 के साथ–साथ सभी केबल प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध है।

कृषि सिंचाई हेतु सोलर पम्पों को बढ़ावा दें

मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने कृषि विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि वे कृषि सिंचाई में विद्युत चालित पम्पों की बजाय 5 हॉर्स पॉवर तक की क्षमता के सोलर पम्पों को बढ़ावा दें जिन पर वर्तमान में 70 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है।

श्रीमती राजे 18 मई को मुख्यमंत्री कार्यालय में कृषि एवं पशुपालन विभाग की वर्ष 2014–15 एवं 2015–16 की बजट घोषणाओं एवं विभागीय कार्यों की प्रगति की समीक्षा कर रही थी। उन्होंने कहा कि सोलर पम्पों के उपयोग से राज्य में बिजली की खपत में कमी आयेगी तथा किसानों को भी सस्ती ऊर्जा मिल सकेगी। उन्होंने कृषि विभाग के अधिकारियों से कहा कि प्रत्येक किसान को अपने खेत में एक डिग्गी बनाने तथा पॉली–हाऊस विकसित करने के लिये प्रेरित करें ताकि किसानों की उपज में वृद्धि हो तथा उन्हें अधिकतम आय मिल सके।

कृषि उपज मंडियों के खुले प्लेटफार्मों को किया जायेगा कवर्ड

कृषि मंत्री श्री प्रभु लाल सैनी ने कहा है कि कृषि उपज मंडियों के खुले प्लेटफार्मों को कवर्ड किया जायेगा। उन्होंने कहा कि इससे मंडी में रखी किसानों की फसलें बारिश से खराब होने से बच सकेंगी। श्री सैनी ने 18 मई को पंत कृषि भवन में भारतीय किसान संघ के प्रतिनिधियों की समस्याओं के लिए गठित समिति और विधायक सलाहकार समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि किसान संघ के प्रतिनिधियों ने जो सुझाव दिए हैं, उन पर गंभीरता से विचार किया जायेगा। राज्य के हाड़ौती क्षेत्र में रबी मौसम के दौरान बाजरा बीज उत्पादन का कार्यक्रम चलाया जायेगा।

श्री सैनी ने कहा कि राज्य में जैविक खेती को प्रोत्साहित करने और इसे किसान के खेत तक पहुँचाने के लिए राज्य सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है। बैठक में किसानों द्वारा कीटनाशकों और उर्वरकों के किए जा रहे अंधाधुंध उपयोग पर भी चिंता व्यक्त की गई।

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में....

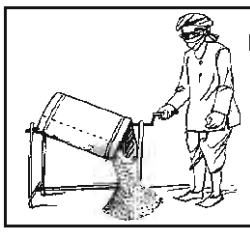

- खरीफ फसलों की उन्नत कृषि विधियाँ पृष्ठ 2

- गुणकारी एवं लाभकारी अनार की उत्पादन प्रौद्योगिकी
- टमाटर में फर्टीगेशन
- आओ देखें: खेती की नई जानकारियाँ पृष्ठ 3

- जून माह के कृषि कार्य
- परख
- गीता री समझ पृष्ठ 4

www.krishi.rajasthan.gov.in

दूरभाष – 0141–5116240, 2227365/354

खरीफ फसलों की उन्नत कृषि विधियाँ

फसल	किस्म	पकाव अवधि (दिनों में)	उपज (क्विं/ हैक्टर)	बीज दर (किलो/ हैक्टर)	बीज उपचार	बुवाई पूर्व उर्वरक (किलो/है) ('अ'या 'ब' में से किसी एक का उपयोग करें) 'अ' डी.ए.पी+ यूरिया	'ब' एस.एस.पी. +यूरिया	खड़ी फसल में यूरिया (किलो / हैक्टर)	खरपतवार नियन्त्रण (दवा की मात्रा/ हैक्टर)	पौध संरक्षण (दवा की मात्रा/ हैक्टर)
बाजरा	एम.पी.एम.एच.–17	79–80	26–28	4	3 ग्राम थायरम प्रति किलो बीज व अन्त में एजेटोबैक्टर (3 पैकेट) एवं पी.एस.बी. कल्चर (3 पैकेट) प्रति हैक्टर	65+40 (जोधपुर व जयपुर खण्ड)	200+65	65	बुवाई के तुरन्त बाद अथ वा अंकुरण से पहले आधा किलो एट्राजिन सक्रिय तत्व 500 लीटर पानी में मिलाकर।	अरगट रोग से बचाव हेतु बीजों को 20 % नमक के घोल से उपचारित कर बोयें इसके लिए 5 लीटर पानी में 1 किलो नमक डालकर बीजों को 5 मिनिट तक डुबोयें।
	आर.एच.बी.–177	74–75	18–20							
	एच.एच.बी.67–2	62–65	22–25							
	आई.सी.टी.पी.–8203	70–75	15–20							
	आर.एच.बी.–121	75–78	22–25							
	आर.एच.बी.– 173	78–80	30–33			65+75 (भरतपुर व गंगानगर खण्ड)	200+100	100		
	जी.एच.बी.–538	70–75	24–26							
	जी.एच.बी.–719	70–75	20–24							
ज्वार	प्रताप ज्वार–1430	90–95	30–35	10	3 ग्राम थायरम प्रति किलो बीज व अन्त में एजेटोबैक्टर (3 पैकेट) एवं पी.एस.बी. कल्चर (3 पैकेट) प्रति हैक्टर	90+50	250+90	90	बुवाई के तुरन्त बाद आधा किलो एट्राजिन सक्रिय तत्व 500 लीटर पानी में मिलाकर।	तना छेदक कीट से बचाव हेतु प्रकाश–पाश का उपयोग करें या क्यूनालफॉस 5 प्रतिशत कण 8 से 10 कि.ग्रा./हैक्टर की दर से पौधों के पोटों में डालें।
	सी.एस.वी.–17	85–90	25–30							
	सी.एस.एच.–13	105–110	45–55							
	सी.एस.वी.–15	105–110	25–30							
	एस.पी.वी.–837	85–90	35–40							
	एस.पी.वी.–96	85–90	30–40							
मक्का	माही धवल	95–100	35–45	20–25	3 ग्राम थायरम प्रति किलो बीज व अन्त में एजेटोबैक्टर एवं पी.एस.बी. कल्चर प्रत्येक 3 पैकेट प्रति हैक्टर	65+75	200+100	100	अंकुरण से पहले आधा किलो एट्राजिन सक्रिय तत्व + 1.5 किलो एलाक्लोर को 500–600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।	तना छेदक कीट से बचाव हेतु बुवाई के 4 सप्ताह बाद फोरेट 10 प्रतिशत कण या कारबोफ्यूरॉन 3 प्रतिशत कण 7–8 किलो / हैक्टर. की दर से पौधों के पोटों में डालें।
	माही कंचन	75–80	25–30							
	पी.ई.एच.एम.–2 (फेम–2)	80–85	40–45							
	पी.ई.एच.एम.–1 (फेम–1)	80–85	40–45							
	प्रताप एच.क्यू.पी.एम.–1	90–95	40–50							
	प्रताप मक्का–3	75–78	40–45							
	प्रताप हाईब्रिड मक्का–2	80–85	40–50							
	जी.एम.–6	80–85	25–30							
ग्वार	आर.जी.एस. 112 (सूर्या ग्वार)	85–99	10–12	15–20	250 पी.पी.एम. एग्रीमाइसीन या 100 पी.पी.एम. स्ट्रेप्टो–साइक्लीन के घोल में 1.5 घन्टे भिगोयें। अन्त में राइजोबियम कल्चर से बीज उपचार करें	80+0	250+20	–	बुवाई के 25–30 दिन बाद निराई–गुड़ाई करें। ग्वार की खड़ी फसल में चौड़ी पत्ती एवं घास कुल के खरपतवारों के नियत्रंण हेतु 15–20 दिन की अवस्था पर इमेजाथिपर 35 % + इमेजामाक्स 35% डब्ल्यू जी का 52.5 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। (जयपुर खण्ड)	मोयला, सफेद मक्खी व तेला कीट के नियन्त्रण के लिए 1 लीटर डायमिथोएट या सवा लीटर मैलाथियॉन तथा बैक्टीरियल ब्लाइट रोग के नियन्त्रण के लिए 3 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 15 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। छाछ्या रोग में 25 कि.ग्रा. गन्धक चूर्ण या 1 लीटर केराथियॉन का भुरकाव/ छिड़काव करें
	आर.जी.सी.–1002/1003	80–90	8–12							
	आर. जी. सी.–1017	92–99	10–14							
	आर.जी.सी.–1031 (ग्वार क्रांति)	110–114	11–16							
	आर.जी.सी.–1055 (ग्वार उदय)	90–100	11–22							
	एच.जी.–365	85–100	12–14							
मूँगफली	आर.एस.वी.–87, आर.जी.–141	110–130	13–16	60–80 (फैलने वाली किस्म) 100 (झुमका किस्म)	कॉलर रॉट से बचाव के लिए क्रमशः थायरम (1.5 ग्राम), ट्राइकोडर्मा (10 ग्राम), सफेद लट की रोकथाम के लिए क्लोथिएनिडिन 50 WDG 2 ग्राम या इमिडा क्लोरप्रिड 200 ए स. एल. 3 मि .ली. से उपचारित करें या 40 कि.ग्रा. बीज को एक लीटर क्लोरोपाइरीफोस 20 ई. सी. से तथा अन्त में राइजोबियम कल्चर (3 पैकेट/ हैक्टर)	130+0	375+35	–	बुवाई, अंकुरण पूर्व एक किलो मेटाक्लोर या पेन्डीमिथेलिन सक्रिय तत्व को 1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें या इमेजाथिपर 100 ग्राम प्रति हैक्टर की दर से घोल बनाकर बुवाई के 10–12 दिन बाद छिड़काव करें।	टिक्का रो ग के लिए मेन्कोजेब 1–1.5 किलो या कार्बेण्डेजिम 250 ग्राम तथा दीमक से बचाव हेतु खड़ी फसल में 4 लीटर क्लोरोपायरीफॉस/ हैक्टर काम में लेवें।
	टी. जी.–37 ए	105–110	20–25							
	जी.जी.–20	115–120	25–30							
	जी.जी–.7	90–100	20–25							
	प्रताप मूंगफली–5	95–97	16–22							
	आर.जी.–425 (दुर्गा)	125–130	32–36							
	आर.जी. 510 (राज. मूंगफली–1)	125–130	26–32							
तिल	आर.टी–351	80–85	8–10	2.5	3 ग्राम थायरम या कैप्टान, जीवाणु अंगमारी रोग से बचाव के लिए 2 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन का 10 लीटर पानी के घोल में 2 घण्टे डुबोकर बीजोपचार करें	50+0	150+25	25	बुवाई के एक माह बाद निराई–गुड़ाई करें। निराई – गुड़ाई न होवे तो एलाक्लोर 1 .5 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।	गॉल मक्खी, फड़का, हॉकमॉथ के लिए क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत या मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत 20 किलो/ हैक्टर की दर से भुरकाव करें
	आर.टी.–125	75–85	9–12	2.5						
	आर.टी.–127									
	प्रताप (शाखा रहित)	110–115	4–5	4.0						
	सी–50									
	आर.टी–346 (चेतक)	83	7–9	2.5						
मूंग	एस. एम. एल.–668	60–65	7–10	15–20	झुलसा रोग की रोकथाम के लिए प्रति किलो बीज को 1 ग्राम बाविस्टीन व राईजोबियम के साथ पी .एस.बी. कल्चर प्रत्येक 3 पैकेट प्रति हैक्टर	90+10	250+45	–	पेण्डामिथेलिन 1 किलो को 1000 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई पूर्व छिड़काव करें। दो निराई 30 व 45 दिन पर करें या खड़ी फसल में बुवाई के 15–20 दिन बाद इमिजाथापर 40 ग्राम सक्रिय तत्व का छिड़काव करें (जयपुर खण्ड)	कातरा कीट से बचाव हेतु मिथाइल पैराथि योंन 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो / हैक्टर या क्लोरपायरीफॉस 1 लीटर या मिथाइल पैरा थियॉन 750 मि .ली का छिड़काव करें।
	आर.एम.जी.–268/344	65–70	10–12							
	एम.यू.एम.–2	60–70	14–16							
	गंगा 1, आर.एम.जी–492	70–75	15–16							
	जी.एम.–4	61–68	13–14							
उड़द	पन्त यू–19	70–80	10–12	15	प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाइरम एवं राईजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर प्रत्येक 3 पैकेट प्रति हैक्टर	90+10	250+45	–	1 किलो ट्राईफ्लूरेलिन या पेण्डामिथेलिन या 2 लीटर एलाक्लोर (जोधपुर खण्ड) बुवाई के दूसरे दिन प्रयोग करें।	मोयला, हरातेला, सफेद मक्खी कीट के नियन्त्रण हेतु डायमिथोएट 1 लीटर/हैक्टर का छिड़काव करें।
	आर.बी.यू–38 (बरखा)									
	के.यू. 96–3 (उत्तरा)	70–72	8–10							
	प्रताप उड़द–1	73–76	10–12							
अरहर	यू.पी.ए.एस.–120	120–140	10–18	20 (मिलवां फसल में 7 किलो)	3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज तथा राईजोबियम के साथ पी . एस.बी. कल्चर प्रत्येक 3 पैकेट प्रति हैक्टर	130+0	375+ 45	–	अंकुरण पूर्व 2 लीटर एलाक्लोर का छिड़काव करें	फली छेदक कीट से बचाव हेतु क्यूनॉलफॉस 2 लीटर या मैलाथियॉन 1 .25 लीटर या कार्बेरिल चूर्ण 2.5 कि.ग्रा./हैक्टर का छिड़काव करें
	आई.सी.पी.एल.–151	120–140	12–20							
	आई.सी.पी.एल.–87	140–150	15–20							
	पूसा–992	150–160	14–18							
मोठ	सी.जेड.एम.–2	65–67	8–10	10–15	जीवाणु पत्ती धब्बा रोग के नियन्त्रण हेतु 1 ग्राम स्ट्रेप्टो–साइक्लिन 10 लीटर पानी में तथा अन्त में राईजोबियम व पी. एस.बी. कल्चर प्रत्येक 3 पैकेट प्रति हैक्टर	66+0	190+25	–	अंकुरण पूर्व 2 लीटर एलाक्लोर (कोटा खण्ड) का छिड़काव करें	चित्ती जीवाणु रोग– स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 1 ग्राम 10 लीटर पानी + 20 ग्राम ताम्रयुक्त कवकनाशी का 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
	आर.एम.ओ–40	62–65	8–9							
	आर.एम.ओ–257									
	आर.एम.ओ–225	62–65	6–8							
	आर.एम.ओ–435 (मरु बहार)									
सोयाबीन	पी.के.–472	100–115	20–25	80	प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थायरम या 2 ग्राम या कॉर्बोक्सिन/ कार्बेन्डेजिम व अन्त में राइजोबियम कल्चर 3 पैकेट प्रति हैक्टर	90+10	250+45	–	इमिजाथाईपर 100 ग्राम बुवाई के 15–20 दिन की अवस्था पर 600 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।	गर्डल बीटल कीट के नियन्त्रण के लिए एसीफेट आधा किलो प्रति हैक्टर या थायोक्लोप्रिड 24 एस.सी. 750 मिली / हैक्टर तथा जीवाणु पत्ती धब्बा रोग में स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 1 ग्राम का 10 लीटर पानी + 30 ग्राम ताम्रयुक्त कवकनाशी का 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें
	जे.एस.–335	95–100	25–30							
	जे.एस.–93–05	85–90	25–30							
	एन.आर.सी–37	90–95	25–30							
	जे.एस. 55–60	85–88	20–22							
	प्रताप सोया–45	95–98	25–30							

गुणवत्तायुक्त अधिक उपज प्राप्त करने के लिए मुख्य बिन्दुः–

★बीज उपचार के लिये राज्य की सभी ग्राम पंचायतों में बीज उपचार ड्रम उपलब्ध कराया गया है। किसान भाई अपना बीज व दवा ग्राम पंचायत में ले जाकर निःशुल्क बीज उपचार कर सकते हैं।

★मिट्टी की जांच करवाकर उर्वरक देवें। असिंचित फसल में उर्वरक की ऊपर दी गई मात्रा की आधी मात्रा काम में लेवें।

★अनाज वाली फसलों में एजेटोबैक्टर, दलहनी फसलों, मूँगफली व सोयाबीन में राइजोबियम व सभी फसलों में पी.एस.बी.कल्चर से बीजोपचार करें।

★तिलहनी व दलहनी फसलों में अन्तिम जुताई के समय 250 किलोग्राम जिप्सम प्रति हैक्टर डालें।

★फसल को खरपतवार मुक्त रखें, समय पर निराई–गुढ़ाई अवश्य करें यदि आवश्यक हो तो उपरोक्तानुसार खरपतवारनाशी दवाओं का उपयोग करें।

★सिट्टा निकलते समय व दाना बनते समय यदि सूखा पड़े तो जीवन रक्षक सिंचाई देवें।

गुणकारी एवं लाभकारी अनार की उत्पादन प्रौद्योगिकी

महत्त्व एवं उपयोगिता:–

*घरेलू और विदेशी बाजार में अनार के अच्छे मूल्य की प्राप्ति को देखते हुए राजस्थान के किसानों का रुझान अनार की खेती करने की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

*अनार में विटामिन ए, सी, ई और फोलिक एसिड तथा लोहा, पोटेशियम, फॉस्फोरस, कैल्शियम प्रचूर मात्रा में उपलब्ध होते हैं।

*अनार एन्टीऑक्सिडेंट के प्राकृतिक स्त्रोत के रुप में सर्वोतम माना जाता है।

*ताजा फल के अलावा विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पाद जैसे– अनार दाना, अनार रस, जैली, सॉस, सिरप के रुप में उपयोग में किया जाता है।

जलवायु एवं भूमि:–

शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायवीय दशाएं अनार उत्पादन हेतु बहुत ही उपयुक्त होती है। पौधों में सूखा सहन करने की अत्यधिक क्षमता होती है परन्तु फल विकास के समय नमी आवश्यक हाती है। अनार लगभग सभी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है परन्तु गहरी दोमट भूमि उपयुक्त रहती है।

प्रमुख उन्नत किस्में:– भगवा, सुपर भगवा, मृदुला व बंडरफुल।

प्रवर्धन : अनार में कलम (कटिंग) तथा गूटी विधि अपनाकर इच्छित गुणों के उन्नत किस्मों वाले पौधे कलम तथा गूटी विधियों द्वारा तैयार किये जाते हैं। इस प्रकार तैयार किये गये पौधों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार ढ़ालने के लिए हार्डनिंग करने की आवश्यकता होती है। कटिंग लगाने के लिए फरवरी माह अधिक उपयुक्त है।

पौधे लगाने की विधि:–

पौधे लगाने का उपयुक्त समय जुलाई–अगस्त माह है परन्तु सिंचाई का समुचित प्रबन्ध हो तो अनार के पौधे फरवरी–मार्च माह के दौरान भी लगाये जा सकते हैं। पौधे लगाने के एक माह पूर्व 60 X 60 X 60 से.मी. आकार के गड्ढ़े खोद लें तथा उन्हें खुला छोड़ दें। पहली वर्षा होते ही गड्ढ़ो में प्रति गड्ढ़ा 15–20 किलो गोबर की सड़ी खाद, 2 किलो वर्मी कम्पोस्ट, 1.5 किलो नीम की खली, 25 ग्राम टाईकोडर्मा व 25 ग्राम पी.एस.बी., 1 किलो सुपरफॉस्फेट, 100 ग्राम क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत अच्छी तरह मिलाकर भर दें एवं पानी देकर मिट्टी को जम जाने दें। स्थिति अनुसार पौध रोपण की दूरी 5X5 मी. / 5X3 मी. / 4.5 X 3 मी. रखी जाती है।

खाद एवं उर्वरक:–

आयु के अनुसार खाद एवं उर्वरक आवश्यकता निम्न प्रकार रहती है :–

आयु	मात्रा			
	गोबर की खाद (किग्रा/पौधा)	यूरिया (ग्राम/पौधा)	सुपर फॉस्फेट (ग्राम/पौधा)	म्यूरेट ऑफ पोटाश (ग्राम/पौधा)
1 वर्ष	8–10	125	50	50
2 वर्ष	16–20	250	100	100
3 वर्ष	24–30	375	150	150
4 वर्ष	32–40	500	200	200
5 वर्ष एवं अधिक	40–50	625	250	250

खाद देने का समय:– अफलन वाले पौधों में जनवरी, जून एवं सितम्बर के दौरान खाद एवं उर्वरक दिया जाना चाहिये।

फर्टीगेशन:–

जल में घुलनशील उर्वरकों का उपयोग बून्द–बून्द सिंचाई संयंत्र में उपस्थित वेन्चुरी या उर्वरक टैंक के माध्यम से भी किया जा सकता है। इस प्रकार फर्टीगेशन के त्वरित परिणाम मिलते हैं तथा पौधों को वर्ष भर संतुलित पोषण दिया जा सकता है। पौधे की अवस्था के अनुसार घुलनशील उर्वरकों का निम्नानुसार उपयोग किया जा सकता है:–

छटाई के बाद (दिन)	उर्वरक (N:P:K)	किग्रा/हैक्टर/दिन	योग (किग्रा)
11–30	12:61:00	1.0 1.0	20 20
31–45	13:40:13	1.5 1.5	22.5 22.5
46–90	19:19:19	1.5 1.0	67.5 45.0
91–120	19:19:19	1.5	45
121–150	13:00:45	3.0	90

फलन:– अनार वर्ष में तीन बार फूल आते हैं:– फरवरी से मार्च, जुलाई से अगस्त एवं अक्टूबर से नवम्बर। इनमें से जुलाई–अगस्त वाली फसल अच्छी होती है तथा फल भी अच्छे होते हैं। पौधे की मजबूती एवं वृद्धि के लिये यह आवश्यक है कि आरम्भ के तीन वर्ष तक फसल नहीं ली जाये। अतः इस समय यदि पेड़ों पर फूल आये तो भी उन्हें तोड़ देना चाहिये।

पौध–व्याधि प्रबन्धन:–

*सूत्रकृमि:– इसका प्रकोप अनार की जड़ों पर होता है। इसके प्रकोप से पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं तथा टहनियाँ सूखने लगती हैं, जड़ गुच्छेदार बन जाती है। पेड़ पर फल छोटे व कम लगते हैं तथा जल्दी गिर जाते हैं। सूत्रकृमि की रोकथाम के लिए मृदा को सौर निर्जर्मिकरण करना चाहिये एवं फल वृक्षों के पास गेंदे के पौधे लगाने चाहिये। इसी प्रकार कार्बोफ्यूरॉन 3 जी 20 ग्राम प्रति पेड़ की दर से गड्ढे तैयार करते समय उपयोग किया जा सकता है। प्रत्येक वर्ष खाद एवं उर्वरक देते समय प्रभावित पौधे में कार्बोफ्यूरॉन या प्रति फल वृक्ष 5–10 किलोग्राम नीम की खली का उपयोग करें।

*फल फटना:– फल फटने का कारण मृदा में अनियमित नमी होना तथा अनियमित सिंचाई करने के साथ बोरोन सूक्ष्म तत्व की कमी मुख्य है। रोकथाम हेतु सही व नियमित अन्तराल पर बाग में सिंचाई करें। जिब्रेलिक एसिड (40 पी.पी.एम.) व बोरेक्स (0.2 प्रतिशत) का पर्णीय छिड़काव फल बनने की आरम्भिक अवस्था पर करें।

तुड़ाई एवं उपज:–

*फलों का रंग जैसे ही हरे से हल्का पीला या लाल में बदलने लगे तो समझ लेना चाहिये कि फल पकने की स्थिति में आ गया है। फूल आने के लगभग 5 से 6 माह बाद फल तैयार हो जाते हैं।

*अनार के 5–6 साल उम्र के अच्छे विकसित पौधे से 20 से 22 किलोग्राम फल प्रति पौधा उपज प्राप्त होती है।

टमाटर में फर्टीगेशन: लाभकारी तकनीक

भारत विश्व का तीसरा प्रमुख टमाटर उत्पादक देश है। राजस्थान में सब्जियों के अन्तर्गत प्याज के बाद टमाटर की खेती सर्वाधिक क्षेत्र में होती है। राज्य में टमाटर के क्षेत्रफल की तुलना में इसकी उत्पादकता कम है। हमें जरुरत है प्रति ईकाई क्षेत्रफल से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की। इसी क्रम में टमाटर की खेती में फर्टीगेशन एक लाभकारी तकनीक है।

जल विलयक उर्वरकों को बून्द–बून्द सिंचाई एवं फव्वारा पद्धति के साथ दिये जाने को फर्टीगेशन कहते हैं। फर्टीगेशन तकनीक, बून्द–बून्द सिंचाई पद्धति कि सहक्रियाशीलता को बढ़ाता है। विभिन्न ग्रेड के तरल या ठोस उर्वरकों को बून्द–बून्द सिंचाई के साथ उपयोग करने से इनकी दक्षता एवं उपयोगिता में अत्यन्त वृद्धि होती है। ये कैल्शियम नाइट्रेट, पोटेशियम नाइट्रेट तथा विभिन्न पोषक तत्वों की विभिन्न ग्रेड यथा 17:40:0, 19:19:19, 13:05:26 के अनुपात में उपलब्ध हाते हैं जो शत–प्रतिशत घुलनशील होते हैं तथा पौधों को पूर्णरुप से तत्काल उपलब्ध होने के क्षमतावान होते हैं। टमाटर के खुले खेतों में उपयोग किये जाने वाले जल विलयक उर्वरकों का विवरण निम्न तालिका में दिया जा रहा है:–

ग्रेड (पोषक मात्रा)	मात्रा किग्रा./है.	प्राप्त होने वाले पोषक तत्व (किग्रा. में)					
		N	P	K	Ca	S	B
12:61:00 (N:P:K)	68	8.16	41.48	–	–	–	–
19:19:19 (N:P:K)	100	19.0	19.0	–	–	–	–
13:05:26 (N:P:K)	127	16.5	6.4	33.0	–	–	–
पोटेशियम सल्फेट	95	–	–	47.5	–	17.1	–
कैल्शियम नाइट्रेट	15	2.3	–	–	2.8	–	–
यूरिया	140	64.4	–	–	–	–	–
बोरेक्स (20 %)	10	–	–	–	–	–	2

आओ देखें खेती की नई जानकारियाँ

किसान भाईयों खेती, पशुपालन, मत्स्यपालन, बीज, भण्डारण, शुष्क खेती आदि कि जानकारी के लिए संबंधित विभाग की वैबसाइट/ई–मेल पर सम्पर्क कर नवीनतम जानकारी प्राप्त कर सकते हैं:–

- कृषि विभाग⇨ www.krishi.rajasthan.gov.in
- उद्यान विभाग⇨ www.horticulture @ rajasthan.gov.in
- राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड⇨ www.rsamb @ rajasthan.gov.in
- राष्ट्रीय बीज निगम⇨ nsc @ indiaseeds.com
- राजस्थान राज्य भण्डारव्यवस्था निगम⇨ rswcho @ gmail.com
- पशुपालन विभाग⇨ www.animalhusbandry. rajasthan.gov.in
- मत्स्य विभाग⇨ www.fisheries. rajasthan.gov.in
- राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान⇨ info@ raridurgapura.org
- केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)⇨ director @ cazri.res.in
- शुष्क वानिकी अनुसंधान संस्थान (AFRI)⇨ www.afri.res.in
- राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र⇨ www.nrccamel.res.in
- राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र⇨ www.nrcss.arg.in
- राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र⇨ www.drmr.res.in
- संदेश व अन्य जानकारी⇨ www.farmer.gov.in
- ऑनलाइन आवेदन के लिए⇨ ssdg.rajasthan.gov.in
- राजस्थान राज्य बीज एवं जैविक उत्पादन प्रमाणीकरण संस्था⇨ dir_rssopca @ rediffmail.com

(शेष अगले अंक में .....)

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"

घर बैठे वर्षभर **खेती री बातां** अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कृषि आयुक्तालय कमरा नं. 250, पंत कृषि भवन, जयपुर के नाम 12/– रुपये का मनीआर्डर भेजें। **स्वयं का साफ–साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।**

डाक पं.सं. **JaipurCity/409/2015-17**
आर.एन.आई – 70296/98

प्रेषक–
उप निदेशक कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

प्रेषिति–

जून माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★**सिंचित मूंगफली** की बुवाई का उपयुक्त समय जून माह के प्रथम सप्ताह से दूसरे सप्ताह तक है। मिट्टी जाँच के आधार पर अंतिम जुताई से पूर्व प्रति हैक्टर 250 किलो जिप्सम मिलायें। मूंगफली के खेत में प्रति हैक्टर 60 किलो फॉस्फेट और 15 किलो नत्रजन (130 किलो डी.ए.पी. अथवा 375 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट व 35 किलो यूरिया) बुवाई के पहले नायले से ऊरकर देवें। फॉस्फेट तत्व की पूर्ति, सिंगल सुपर फॉस्फेट (एस.एस.पी.) द्वारा किया जाना अधिक उचित है।

★**मूंगफली में गलकट** (कॉलर रॉट) रोग से बचाव के लिये बुवाई से पहले प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाईरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या 2 ग्राम मैन्कोजेब से उपचारित करें। रासायनिक फफूंदीनाशी का कम उपयोग करना हो तो बीज को थाइरम (1.5 ग्राम) एवं ट्राईकोडर्मा (8–10 ग्राम) प्रति कि.ग्रा. बीज तथा राइजोबियम कल्चर 3 पैकेट प्रति हैक्टर की दर से उपचारित कर बुवाई करें। इसके साथ ही बुवाई पूर्व ट्राईकोडर्मा 2.5 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से 100 कि.ग्रा. गोबर की खाद में मिलाकर भूमि में मिलायें।

★**मूंगफली** की फसल में **सफेद लट** की रोकथाम के लिए क्लोथिएनिडिन 50 डब्ल्यू.डी.जी. 2 ग्राम दवा से प्रति किलो बीज (गुली) को उपचारित करें (उपचारित बीज को 2 घंटे छांया में सुखाकर बुवाई करें) या 80 किलो बीज में 2 लीटर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. या इमिडाक्लोप्रीड 200 एस.एल. 240 मि.ली. मिलाकर बुवाई करें।

★**कपास** में सफेद मक्खी, ग्रे–वीविल, जैसिड़ व थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए कीट दिखाई देने पर डाईमिथोएट 30 ई.सी. दवा या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. 1 लीटर प्रति हैक्टर का छिड़काव करें या मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण 20 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करें।

बागवानी

★**नींबू** वर्गीय फलदार पौधों में फल गिरने की समस्या की रोकथाम हेतु प्लेनोफिक्स हारमोन का 3 मिलीलीटर प्रति 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

★**आंवला** में बोरेक्स का 0.4 प्रतिशत (4 ग्राम प्रति लीटर पानी) व जिंक सल्फेट का 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का घोल बनाकर छिड़काव करें।

★**अंगूर** को जल्दी पकाने व मिठास बढ़ाने के लिए एथीफोन 50 मिली+बोरैक्स 100 ग्राम 100 लीटर पानी में घोल बनाकर पकने के 15 दिन पूर्व छिड़काव करें। इस समय सिंचाई पूर्णतः बंद रखें।

सब्जियाँ

★**भिण्डी** की खरीफ फसल की बुवाई जून माह में करें। भिण्डी की अर्का–अभय, परभनी क्रान्ति, पूसा मखमली, पूसा सावनी, अर्का अनामिका किस्मों का 10–12 किलो बीज प्रति हैक्टर की दर से बुवाई करें।

★**कुकुरबिट्स, बैंगन** व **टमाटर** में माइट्स की रोकथाम हेतु मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. 1 लीटर प्रति हैक्टर या डायकोफॉल 18.5 ई.सी. दवा 1.25 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

★**कुष्माण्ड कुल** की सब्जियों में फल मक्खी की रोकथाम हेतु मैलाथियॉन 50 ई.सी. या डाईमिथोएट 30 ई.सी. 1 मिलीलीटर दवा का प्रति लीटर पानी में प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। इससे हरा तेला एवं मोयले का भी नियंत्रण हो जाता है।

★**टमाटर, बैंगन** व **मिर्च** की वर्षाकालीन फसल की तैयार पौध का खेत में निश्चित दूरी पर रोपण करें। मिट्टी की जाँच रिपोर्ट के आधार पर सिफारिश की गई खाद व उर्वरक का उपयोग करें।

★**फूल गोभी** की इस माह में पूसा कार्तिकी, पूसा दीपाली किस्मों की बुवाई करें। इस हेतु 600–750 ग्राम बीज प्रति हैक्टर की आवश्यकता होती है। बीजों को कार्बेन्डेजिम 1 ग्राम व कैप्टान 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करके नर्सरी में बुवाई करें।

पुष्पोत्पादन

★**वर्षाकालीन मौसमी फूल** जैसे गैंदा, बालसम, जीनिया, सूरजमुखी, कोक्स–कॉम्ब आदि की नर्सरी तैयार करें तथा तैयार नर्सरी में झारे से नियमित सिंचाई करते रहें एवं खरपतवार निकालें।

★क्यारियों में लगी **गुलदाउदी** से सकर्स को अलग कर लगायें।

★**गैंदा** की वर्षाकालीन फसल की पौध का खेत में रोपण करें। कतारों के बीच 60–90 सेमी व पौधों के बीच 45–60 सेमी. की दूरी रखें।

★**रजनीगंधा** की फसल से प्रति स्पाइक फूलों की संख्या व स्पाइक की लम्बाई बढ़ाने के लिए जी.ए. 3 (जिब्रेलिक एसिड़) 50 मि.ग्रा. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर पर्णीय छिड़काव करें।

परख

मई, 2015 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उतर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये दो विजेता कृषकों के नाम हैं–

1.श्री संदीप गोदारा
पुत्र श्री रोहिताश गोदारा,
वार्ड न.–20,
हीरादास की बगीची के पास,
सूरजगढ़, जिला–झुंझनूं
2.श्री दीन दयाल शर्मा,
पुत्र श्री शिवराम शर्मा
ग्रा. पो.– बसेड़ी
जिला– धौलपुर (328022)

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 राज्य स्तरीय कृषक पुरस्कार समारोह में कुल कितने किसानों को राज्य स्तर का पुरस्कार मिला?
प्र.2 पशुपालन विभाग की वैबसाइट का नाम बताइये?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब –
उप निदेशक, कृषि (सूचना),
कमरा नम्बर 118, कृषि आयुक्तालय, पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक उप निदेशक, कृषि (सूचना), कृषि विभाग, राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक – खेमराज शर्मा
सम्पादक – डॉ. पूनम चौधरी
परामर्श – जे.पी. यादव
डिजाइनर – आर. मैसी